शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कमलेश्वर के उपन्यासों में गांधी विचारधारा का प्रभाव

प्रा.दत्तात्रय दशरथ पटेल

पू.सा.गू.वि.प्र.मंडलका कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय

शहादा, नंदुरबार, महाराष्ट्र, भारत

शोध संक्षेप

हिन्दी उपन्यासों में कमलेश्वर का विशेष स्थान रहा है। कमलेश्वर ने साहित्य रचना करते वक्त आम आदमी को केंद्र में रखा है। उन्होंने उपन्यासों में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, नैतिक, वैचारिक सभी पहलुओं पर अपनी लेखनी चलायी है। कमलेश्वर ने अपने जीवन में 15 उपन्यासों की रचना की है, जिनमें एक सड़क सत्तावन गलियां 1956, लौटे हुए मुसाफिर 1957, डाक बंगला 1961, तीसरा आदमी 1962, समुद्र में खोया हुआ आदमी 1963, काली आंधी 1970, वही बात 1971, आगामी आतीत 1972, सुबह दोपहर शाम 1973, रेगिस्तान 1980, एक और चंद्रकांता दो खंड 1997-98, कितने पाकिस्तान 2000, पति पत्नी और वह 2006, अम्मा 2006, अंतिम सफर 2012 मरणोत्तर प्रकाशित। इन पंद्रह उपन्यासों पर महात्मा गांधी के विचारों का प्रभाव कहीं न कहीं दिखाई देता है। कमलेश्वर ने गांधीजी के विचारों को उपन्यासों में स्थान दिया हुआ दिखाई देता है। कमलेष्वर को वामपंथी साहित्यकार भी कहा जाता है। कमलेष्वर के उन्यासों में सोच और कार्य का समवय सूत्र हमें मिलता है।

उपन्यासों में गाँधी विचारधारा

एक सड़क सत्तावन गलियां उपन्यास में लेखक ने निम्नवर्गीय समाज के सामाजिक, आर्थिक और वैयक्तिक जीवन का यथार्थ चित्रण प्रभावी ढंग से किया है। कस्बे में व्याप्त सांप्रदायिक तनाव, कम्युनिस्ट-कांग्रेस विवाद, समाचार पत्रों की दयनीय स्थिति, झूठी नेतागिरी, रामलीला और नाटक मंडली, ड्राईवरों का व्यस्त जीवन का तनाव तथा प्रेम में टूटते बिखरते जीवन को यथार्थ रूप में चित्रित किया है।1 गांधीजी ने स्त्री को अबला नहीं माना था। उसके अंदर लड़ने की अपार शक्ति होती है। उपन्यस में नौटंकी खत्म होने के बाद एक नट ने जब बंसरी को छेड़ा तो वह बिफर कर कहती है, ''जा-जा अपने तबेले में सो, इधर का रुख किया तो जान सलामत नहीं।2'' उपन्यास में सर्वानंद महाराज और उनके शिष्य अनैतिक कार्य करने लगे। इसलिए ही सर्वानंद आश्रम मशहूर हुआ। सरनामसिंह कलकी अवतार वाली बात पर विश्वास ही नहीं करता और सर्वानंद आश्रमवालों से झगड़ा करता है और उन्हें धमकी देता है, ''यह सब ढोंग है। हिम्मत करो तो कलई खुल जाए सालों की...।3 गांधीजी ने भी जहां अन्याय हुआ वहां आवाज उठायी। गांधीजी ने अंग्रेजों से मुक्ति के लिए अहिंसा का मार्ग अपनाया था। उपन्यास का पात्र चतुर इसी भाषा में समझाता है, ''यह दया-धर्म-अहिंसा की बात है और जब आदमी अहिंसा करेंगे तब उसे डरना नहीं चाहिए। और आदमी डरेगा नहीं तो जीतोगे और जीत तुम्हारी नहीं सत्ता की होगी।4 रंगीले इस पात्र को गांधीजी का 'उठ जाग मुसाफिर भोर भई अब रैन कहां जो सोवत है।5 यह गीत बहुत

प्रिय था।

'लौटे हुए मुसाफिर' में भारत पाकिस्तान के बंटवारे और सांप्रदायिकता की पृष्ठभूमि पर आधारित है। इस उपन्यास का केंद्र बिंदु चिकवा नामक बस्ती की कस्बाई जिंदगी है। इस उपन्यास में स्वतंत्र पाकिस्तान बनने पर हमारी परिस्थितियां बदल जाएंगी। इस झूठे आशावाद का विरोध करते हुए नसीबन कहती है, "दिमाग खराब हो गया है इन लोगों का। अरे पूछो, क्या बदलोगे। अपना नसीब जो है, वही रहेगा।"6 जब बस्ती में भारत-पाकिस्तान का बंटवारा हो जाता है, तब दो हिंदु बच्चे नसीबन के पास रह जाते हैं, तब वह हिंदु हैं इसलिए बच्चों को मुसलमान नहीं बनाती बल्कि पति के साथ बच्चे के पिता को बुलाकर उन्हें वापस देती हैं और उन्हें अपने भी कहती है, "हैं तो अपने पर विपदा में घिरा है बेचारा...इधर चोरी-छुपे रहते हुए काम-धाम भी नहीं कर पाया होगा, उपर से बच्चे जा रहे हैं, कुछ जरूरत भी तो पड़ेगी उसे...कह देना अपने समझकर ही खर्च कर ले। कोई बात मन में न लायें।"7

आगामी अतीत का नायक है कमलबोस, जो सामाजिक प्रतिष्ठा और वैयक्तिक सफलता के पीछे भागते हुए आधुनिक मानव का प्रतिनिधि है। उपन्यास की नायिका चंदा कमलबोस का इंतजार करते-करते थक जाती है, लेकिन कमलबोस नहीं आता। तब चंदा की शादी हो जाती है। उसे एक लड़की होती है। उसका नाम चांदनी रखा था। चंदा की मौत होने पर वह उसकी लाष के पास एक जेल में बैठी रहती है, तब एक कैदी उसे बेटी कहकर उसके साथ बलात्कार करता है। तब चांदनी के पास एक ही रास्ता रहता है, वह है वेश्या बनना। गांधीजी ने भी नारी जाति की बदनसीबी वेश्यावृत्ति को भी मिटाना चाहा था। इसके लिए उन्होंने ठोस उपाय बताते हुए लिखा है, "वेश्यालयों की समस्या हल करने का उचित तरीका तो यह है कि स्त्री दुहरा प्रचार करे 1 उन स्त्रियों को जीविका के लिए अपनी इज्जत बचेती है, और 2 पुरुषों में। वे उन पुरुषों को शरमायें और उन्हें स्त्रियों के प्रति जिन्हें वे अज्ञानवश या अभिमानवश अबला समझते हैं ज्यादा अच्छा व्यवहार करने के लिए समझायें।"8 उपन्यास में कमलबोस उसे वेश्या व्यवसाय से बाहर निकालना चाहता है, उसे बेटी भी कहता है। उसे अपने घर लाना चाहता है, लेकिन चांदनी वहां जाने के लिए तैयार नहीं होती।तीसरा आदमी उपन्यास में निम्न मध्यवर्गीय परिवारों की कुंठाओं, हताशा, आर्थिक असमर्थता और अटूट संदेहवृत्ति से उत्पन्न विफल जीवन की कथा है। गांधीजी ने संयुक्त परिवार पर भी जोर दिया था। संयुक्त परिवार में एकता होती है। संयुक्त परिवार का बड़ा महत्व होता है, वह एक-दूसरे से बंधा होता है। उपन्यास में नरेश अपने घर के बारे में कहता है, "हम सब मिलकर एक घर बनाये हुए थे या एक घर था जो हम सब को बड़ी गहराई से बांधा हुआ था जो कुछ होता था, वह इसी घर के लिए।"9 गांधीजी ने ग्रामीण जीवन के हस्त उद्योगों को और बढ़ाने के लिए कहा था। मशीनीकरण होने से आदमी को दुख, पीड़ा, यातना सहना तथा हस्तोद्योगों का ह्रास होने वाला था। उपन्यास में नरेश भी मशीन की तरह काम में व्यस्त दिखाई देता है। वह केवल आवाजों की दुनिया से अपने आप को घिरा हुआ पाता है। वह अपनी पीड़ा बताता हुआ कहता है, "आवाजों की

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

दुनिया। सेन्ट्रल कंट्रोल रूम में सैकड़ों आवाजों भरी हुई थी। इंजीनियर व्यस्त थे। आवाज एक-दूसरे को काटती उंची उठती हुई दूर जा रही थी। कुछ आवाजें डूबती जा रही थीं। किसी ड्रामे की सिसिकिंया, राहें सिसकिंया। आवाजें....आवाजें....सिर्फ आवाजें...।10 एक-दूसरे के मूल्यों को परिवारों में समझते आना चाहिए। रोहित मेहता कहते हैं, ''मूल्य न तो किसी मशीन द्वारा उत्पादित वस्तु है और न यह किसी सरकार द्वारा निर्मित कानून है। मूल्य तो जीवन के प्रति गुण है, एक अंतर्दृष्टि है, एक अवधारणा है, एक दृष्टिकोण है।''11

वही बात उपन्यास में कमलेष्वर जी ने आज के स्पर्धामूलक उच्च आकांक्षाओं के कारण हो रहे परिवारों का विघटन का चित्रण प्रस्तुत किया है। गांधीजी ने स्त्री को बंधन मुक्त माना है, उसे भी अपनी जिंदगी जीने का अधिकार है। उपन्यास में ऐसे ही विचार कमलेष्वर ने खजांची द्वार कहलाए हैं। जब समीरा प्रषांत से अलग होकर नकुल के साथ जीवन बिताना चाहती है, तब खजांची बाबू तहसीलदार को पीटते हुए कहता है, ''औरत को अपनी जिंदगी जीने का हक क्यों नहीं है ? हम कब तक उसे बेइज्जत करते रहेंगे ? आदमी औरत बदल ले तो ठीक। औरत आदमी बदल ले तो गलत...। वाह...वाह क्या मैथेमेटिक्स है।''12 पुरुष की जिंदगी को सफल बनाने में औरत का स्थान अन्यतम है। साथ ही उसका अस्तित्व भी अनिवार्य है। हरिभाउ उपाध्याय कहते हैं, ''सहयोग जीवन का तत्व है, विरोध जीवन का दोष। इसलिए दोष के विरोध को जीवन में स्थान है। स्त्री-पुरुष एक-दूसे के दोषों का विरोध और गुणों का और चीखना और किसी भाषण की तेजी आवाज और उधर अंग्रजों में न्यूजरील के इफेक्ट्स। चलती मशीनों का शोर चीखते हुए इंसान और उसके बीच उभरती हुई

सम्मिलन करते हुए पूर्ण दशा को पहुंचे, यही सृष्टि रचयित को अभीष्ट है।''13

काली आंधी उपन्यास में कमलेश्वर ने स्वाधीनता के बाद भारत की राजनीतिक स्थिति का सम्यक तथा यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। राजनीति में जात-पांत, उंच-नीच के माध्यम से चुनाव से कार्य किए जाते हैं। गांधीजी ने जनतंत्र की जो व्याख्या की है, वह अद्भुत है और सत्यं, शिवम् सुंदरम स्वरूप प्रतीत होती है। गांधीजी के शब्दों में वह इस प्रकार अभिव्यक्त हुई है, ''अनुशासन और विवेकयुक्त जनतंत्र दुनिया सबसे सुंदर वस्तु है।''14 उपन्यास में मालती केा भोपाल चुनाव क्षेत्र मिल जाता है। तो विरोधी गुण्डागर्दी के माध्यम से चुनाव की पृष्ठभूमि तैयार करते हैं। तब मालती चुनाव क्षेत्र में आकर कार्यकर्ताओं की अंतरंग बैठक बुलाकर चुनाव नीति को समझाती हुई कहती है, ''देखिए, हमें विरोधी दलों के हथकंडे नहीं अपनाने हैं। चुनाव एक पवित्र कार्यक्रम है। हम जनता के पास अपनी असली कार्यक्रम लेकर जाएंगे और जनता की समझ पर ही निर्भर करेंगे। पैंतरेबाजी और उठा-पटक का सवाल नहीं हम जातियों के आधार पर भी चुनाव नहीं लड़ेंगे क्योंकि हमारी नीति किसी खास जाति के लिए नहीं है, पूरी जनता के लिए है।''15 इस प्रकार के उद्गारों से पता चलता है कि कमलेश्वर पर गांधी विचारों का प्रभाव भी हुआ।

रेगिस्तान इस उपन्यास का कथ्य अपने ही देश में आजादी के पूर्व और आजादी के बाद आए सामाजिक,

आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और शैक्षणिक बदलावों को प्रभावात्मक रूप में प्रस्तुत करता है। यह उपन्यास गांधीवादी विचारधारा से ओतप्रोत है। उपन्यास का नायक विष्वनाथ एक कट्टर गांधीवादी है। गांधी जी के आह्वान पर राष्ट्रभक्ति और राष्ट्र भाषा के उत्थान के लिए वह अपना सारा जीवन समर्पित करता है। घर-परिवार सब कुछ त्याग देता है और देश के कोने-कोने तक घूमकर हिंदी मंदिरों की स्थापना करता है। सन् 1930 में गांधी के एक आदेष पर हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए बीस वर्ष की अवस्था में दक्षिण भारत की यात्रा पर जाता है। गांधी जी ने देश को गुलामी से मुक्ति दिलाने के लिए एक राष्ट्र भाषा होनी चाहिए, इस पर बल दिया था। उपन्यास का नायक विश्वनाथ पौराणिक संदर्भ देते हुए लोगों को राष्ट्र भाषा और निजभाषा का महत्व समझाते हुए कहता है, ''तुम अपने पैर पर कुल्हाड़ी मार रहे हो। सोचो! याद करो वषिष्ट ने क्या किया था। ऋषि अगस्य ने क्या किया था ? वे भी तो यही करके गए थे जो प्रचार कर रहे थे। तब तक गणराज कहां से आएगा।16 सुशीला भी गांधीवादी होने के कारण देश में भावात्मक एकता एवं अखंडता को बनाए रखना चाहती है। जब देश को लेकर विश्वनाथ और सुशीला बातें करते हैं तब विश्वनाथ सोचता है, ''यह कैसा अनुभव था ? क्या आदमी और औरत इतने अपने होते हैं। इस तरह छोटी-छोटी, सीधी-सीधी बातें करते हैं। इतनी सच्ची-सच्ची बातें जो मन में घर करती जाती हैं, गांधी जी की बातों की तरह।''17 सुशीला भी गांधी जी और विश्वनाथ की तरह गुलामी से मुक्ति चाहती है। आखिर में हिंदी मंदिर बनवाने के लिए सुशीला भी जमीन देती है।

इसलिए राजेंद्र यादव ने कहा है, ''कमलेश्वर अपना सच नहीं बोल सकता। मगर युग और अपनी पीढ़ी को सच वह जरूर बोल सकता है। उसके पास जबान है और उसे बात करनी भी आती है, क्योंकि इसी समय सच पर आकर बड़े-बड़े जबानदार लोग चुप हो जाते हैं।''18

संदर्भ ग्रंथ

1 कमलेश्वर के उपन्यास, डा.सत्यनीत चिखलीकर, पृष्ठ 157, सन् 2003